नाव सिन्धु में छोड़ी

आशीर्वचन

डॉ. रामकुमार वर्मा

गुलाबजी में जो प्रतिभा है, उस प्रतिभा का प्रयोग, उपयोग और हिन्दी के प्रति उनका सहयोग इतना अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो रहा है कि विदेशों में भी हम उनके काव्य और साहित्य के माध्यम से हिन्दी-दिवस मनाये जाने की बात सोचते हैं और उससे भी अधिक मुझे इस बात की आशा है कि विदेशों में जाकर और भी अच्छा कार्य करेंगे।

गुलाबजी में और उनके काव्य में भाषा पर इतना अच्छा अधिकार है कि भावों की अभिव्यक्ति में उनके शब्द पीछे नहीं रहते। वे जो बिम्ब खींचना चाहते हैं वह सहज ही आँखों के आगे उतरता जाता है। ऐसा लगता है जैसे भावों के मेघ-गर्जन में उनका काव्य मयूर पंख की भाँति सुरम्य होकर नाचने लगता है। इससे बढ़कर और कोई बात नहीं कही जा सकती। मैं गुलाबजी को अपनी पीढ़ी का सर्वश्रेष्ठ कवि मानता हूँ और जब गंभीर साहित्य की चर्चा चलती है तो उनकी रचनाएँ सुना-सुनाकर लोगों को चमत्कृत कर देता हूँ।

मैं गुलाबजी को, उनकी काव्य-प्रतिभा का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए, हार्दिक साधुवाद और बधाई देना चाहता हूँ। कि उनकी प्रतिभा निरंतर अग्रसर होती रहे कि वह सारे विश्व में फैल जाय कि वह हमारे साहित्य का प्रतिनिधित्व, इस देश में तो है ही, विदेशों में भी जाकर करें। इससे हिन्दी का कल्याण और उनकी प्रतिभा का समादर होगा।

मैं फिर उन्हें बधाई देता हूँ।

डॉ. रामकुमार वर्मा (पद्मभूषण)
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय